26.7.2017

नेपियर घास की खेती से वर्ष भर हरा चारा उपलब्धः एक कृषक की सफलता

बृजपाल सिंह, मनीष तोमर, राकेश पांडे
कृषि विज्ञान केन्द्र
भाकृअनुप- भारतीय पशुचिकित्सा अनुसंधान संस्थान
इज्जतनगर- 243122

भारत में, विश्व के कुल 2.29 प्रतिशत क्षेत्र पर विश्व का 10.71 प्रतिशत पशुधन है। वर्ष 2012 की पशु गणना के अनुसार भारत में गौवंश, भैस ,भेड़, बकरी एवं शूकरों की संख्या क्रमश 190.09, 108.7, 65.02,135.2 एवं 10.3 मिलियन है तथा वर्ष 2015-16 के अनुसार दुग्ध उत्पादन 146.3 मिलियन टन है। समुचित मात्रा में पशु आहार एवं चारे की उपलब्धता, पशुधन की उत्पादकता को बनाये रखने तथा दुग्ध उत्पादन बढ़ाने में अहम भूमिका निभाता है। दुग्ध उत्पादन के कुल खर्च का लगभग 60 प्रतिशत व्यय पशु आहार पर ही होता है। भारत में कुल फसल क्षेत्र के केवल 4 प्रतिशत क्षेत्र में ही चारा उत्पादन किया जाता है , जिसके कारण हरे तथा सूखे चारे की अत्यधिक कमी है (सारणी संख्या 1) तथा प्रति पशु प्रति वर्ष इसकी उपलब्धता क्रमशः 1.2 तथा 1.4 मैट्रिक टन है।

श्री साॅवलिया शरण सिंह 'कुशवाहा' नेपियर घास की खेती करने वाले कृषक

सारणी स0 1 भारत में कुल हरे तथा सूखे चारे की उपलब्धता की स्थिति

चारे का प्रकार	हरा चारा	सूखा चारा
उपलब्धता (मिलियन टन में)	395.20	450.00
आवश्यकता (मिलियन टन में)	1061.00	589.00
चारे की कमी (मिलियन टन में)	665.80 (62.76 प्रतिशत)	138.00 (23.46 प्रतिशत)

स्रोतः http://dahd.nic.in/sites/default/files/RS%201774eng.docx02.docx

भारत में वर्ष 2050 तक हरा एवं सूखे चारे की मॉग क्रमशः 1012 एवं 631 मिलियन टन तक पहुॅच जायेगी जबकि उत्तर प्रदेश में केवल 66,000 हेक्टर भूमि स्थायी चारागाह तथा चराई क्षेत्र के अन्तर्गत है तथा प्रति वर्ष घटती जोत जैसी समस्या के कारण हरे चारे की कमी और बढ़ती जा रही है। इन परिस्थतियों में कृषकों के सामने पशुओं के लिये हरे चारे की व्यवस्था बनाये रखना एक बड़ी चुनौती है। इस दिशा में कृषि विज्ञान केन्द्र, भारतीय पशुचिकित्सा अनुसंधान संस्थान इज्जतनगर विभिन्न प्रसार कार्यक्रमों जैसे कृषक प्रशिक्षण, गोष्ठी, प्रक्षेत्र परीक्षण, अग्र पंक्ति प्रदर्शन, कृषक स्तर पर नैदानिक भ्रमण, जागरूकता आदि कार्यक्रमों का आयोजन करके कृषकों को हरा चारा उत्पादन करने के लिये प्रोत्साहित कर रहा है।

कृषि विज्ञान केन्द्र के प्रयास से श्री सॉवलिया शरण सिंह 'कुशवाहा' के खेत पर नेपियर घास की विभिन्न अवस्थायें

कृषि विज्ञान केन्द्र, भारतीय पशुचिकित्सा अनुसंधान संस्थान इज्जतनगर के सहयोग से बरेली जनपद, ग्राम गिरधारीपुर के कृषक श्री सॉवलिया शरण सिंह कुशवाहा ने हरे चारे की कमी को बड़ी आसानी से हल कर लिया। श्री सॉवलिया शरण सिंह कुशवाहा जो खेती के साथ एक डेयरी कृषक भी है, उनके सामने डेयरी पशुओं के लिये वर्ष भर हरे चारे की कमी एक गम्भीर समस्या थी। हरे चारे के लिये पूर्व में वह ज्वार व बाजरा उगाते थे जिससे वर्ष भर हरा चारा मिलना सम्भव नही था तथा बीज खरीद, जुताई, खाद आदि से लागत भी अधिक आती थी। हरे चारे की समस्या के समाधान हेतु श्री शरण सिंह ने कृषि विज्ञान केंन्द्र- भारतीय पशुचिकित्सा अनुसंधान संस्थान इज्जतनगर में

सम्पर्क किया तथा कृषि वैज्ञानिकों से विचार विमर्श कर अपने खेत में नेपियर घास उगाने का निर्णय लिया। आपकी शिक्षा हाई स्कूल है तथा आपसे पास कुल 21 बीघे कृषि योग्य भूमि है जिसमें से 2 बीघे में हरे चारे के लिये नेपियर घास की खेती कर रहे है। कृषि भूमि, आवास एवं डेयरी व्यवसाय एक ही स्थान पर होने के कारण प्रक्षेत्र की देखरेख भी अच्छी है।

श्री सॉवलिया शरण सिंह 'कुशवाहा' के फार्म पर नेपियर घास के हरे चारे को खाती हुई गाय

श्री शरण सिंह ने वर्ष 2013 में कृषि विज्ञान केंन्द्र द्वारा नेपियर घास की (प्रजाति ब्व्3) की 500 रूट स्लिप्स (जड़) उगाने के लिए दी गई थी। वर्ष 2017 में 2 बीघे भूमि में नेपियर घास के 2500 गुच्छ हैं जो 21 व्यस्क गाय, 02 बैल तथा 07 बछियाओं के लिये प्रयाप्त रहते है। नवम्बर से जनवरी माह तक, सर्दियों में, नेपयिर के साथ सहफसली के रूप में बरसीम व जेई हरे चारे के लिये उगाते है तथा फरवरी माह से नवम्बर तक केवल नेपियर घास ही चारे के लिये उपयोग में लाते है। इस प्रकार वर्ष भर हरा चारा उपलब्ध रहता है। वे नेपियर की प्रत्येक कटाई के तुरन्त बाद एक सिचाई व दो बार यूरिया (10 किग्रा यूरिया सिंचाई के तुरन्त बाद तथा 10 किग्रा 10 दिन पश्चात) छिड़काव करते है। उन्होंने अपने अनुभव के आधार पर बताया कि ऐसा करने से नेपियर की वृद्ध अचछी होती है तथा नेपियर घास काटने में भी नरम रहती है। नेपियर घास की प्रथम बार रूट स्लिप्स बोने के समय 15 ट्रोली गोबर की खाद की छः इंच मोटी परत डाली थी, उसके पश्चात 4 वर्षो में अन्य कोई खाद नही डाली। पिछले चार वर्षो में नेपियर घास में न तो कोई रोग लगा और नही किसी कीट ने कोई नुकसान पहुॅचाया।

सिंचाई हेतु मार्च से जून के मध्य 12 से 15 दिन में एक बार सिंचाई तथा अक्टूबर से फरवरी के मध्य 20 से 25 दिनों में एक बार सिंचाई तथा जुलाई से सितम्बर तक वर्षा के अनुसार आवश्यकता होने पर सिंचाई करते है। आपके प्रक्षेत्र पर नेपियर घास की वृद्धि 35-40 दिनों में पॉच से छः फीट ऊॅचाई तक हो जाती तथा एक नेपियर घास के गुच्छ में 12-15 किलो हरा चारा प्राप्त होता है। आपके यह भी बताया कि प्रतिदिन 50 गुच्छ की कटाई से 21 पशुओं को हरे चारे की पूर्ति हो जाती है। उन्होंने यह भी बताया कि नेपियर घास को 2-3 इंच की ऊॅचाई से काटने से घास की वृद्धि तो अधिक होती है लेकिन नेपियर घास गिर जाती है, लेकिन जमीन के स्तर से काटने से वृद्धि देरी से होगी

लेकिन कल्ले से निकली जडे जमीन को पकड़ लेती है जिससे नेपियर गिरती नही है। उन्होंने यह भी बताया कि अन्य हरे चारे की तुलना में नेपियर घास खिलाने से उनके पशुओं के दुग्ध उत्पादन में 10 प्रतिशत की वृद्धि प्राप्त हुई । उन्होंने बताया कि पूर्व में पशु अन्य हरे चारे को खाना छोड़ दिया करते थे, लेकिन नेपियर घास को खिलाने में ऐसा नही हुआ अर्थात पशु नेपियर घास को काटकर व साबुत दोनों प्रकार से पूर्ण रूप से बड़े चाव से खाते है। उन्होंने यह भी बताया कि वर्ष भर हरा चारा उपल्बध होने की स्थति में उनका कोई भी पशु बॉझपन जैसी ज्वलंत समस्या से ग्रसित नही रहा, सभी पशु समय पर गर्मी में आते है तथा गर्भादान के बाद सभी पशु गर्भित रहते है।

कृषकों के लिये सलाह के रूप मे उनका सुझाव है कि कृषक एक गाय के लिये 60 पौधे लगाये तथा 35-40 दिन पश्चात नेपियर घास के प्रतिदिन दो गुच्छ खिलाये तथा नवम्बर से जनवरी माह में नेपियर घास के साथ बरसीम व जेई को सहफसली के रूप में उगाये, ऐसा करने से वर्ष भर हरा चारा उपल्बध रहेगा ।

श्री शरण सिंह ने स्वयं भी नेपियर घास का भरपूर लाभ उठाया तथा साथ ही नेपियर को हरे चारे के रूप में उत्तर प्रदेश के बरेली एवं उत्तराखंड के रूद्रपुर जनपदों में भी किसानों को नेपियर की रूट स्लिप्स की बिक्री द्वारा अतिरिक्त आय अर्जित की। आपने बरेली जनपद के बिबियापुर गॉव में तीन कृषकों को 1400 नैपियर की रूट स्लिप्स तथा रूद्रपुर के दिनेशपुर गॉव में एक कृषक को 1500 रूट स्लिप्स, बागवाला गॉव में एक कृषक को 1000 रूट स्लिप्स तथा भगवानपुर गॉव में एक कृषक को 1000 रूट स्लिप्स की बिक्री कर आय अर्जित की। भविष्य में नेपियर घास की नवीन प्रजाति (ब्व्4 एवं ब्व्5)अपने खेत में लगाने हेतु खेत तैयार कर रहे है।

श्री सॉवलिया शरण सिंह ’कुशवाहा’ युवाओं को कृषि विज्ञान केन्द्र पर ’कृषि में उद्यमिता’ विषय पर व्याख्यान देते हुए

श्री शरण सिंह निरन्तर भारतीय पशुचिकित्सा अनुसंधान संस्थान के कृषि विज्ञान केन्द्र के सम्पर्क में रहते है। आपने विभिन्न विषयों जैसे मधुमक्खी पालन, डेयरी व्यवसाय विषय में प्रशिक्षण प्राप्त किया है। श्री शरण सिंह आज नेपियर घास की खेती करके एक अनुभवी उद्यमी सिद्ध हो चुके है, उन्हें कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा कई अवसरों पर सम्मानित भी किया जा चुका है। समय-समय पर कृषि विज्ञान केन्द्र में कृषकों के ज्ञानवर्धन एवं युवाओं को कृषि की ओर रूख अपनाने हेतु व्याख्यान देने भी आते है। उनके दो पुत्र श्री सुशील (43वर्षीय) एवं श्री सतीश (49वर्षीय) कृषि व्यवसाय, पशुपालन तथा मौनपालन में उनका हाथ बंटाते है।